दिवाकर चित्रकथा

# सम्राट सम्प्रति

प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

अंक ४५

मूल्य 20.00

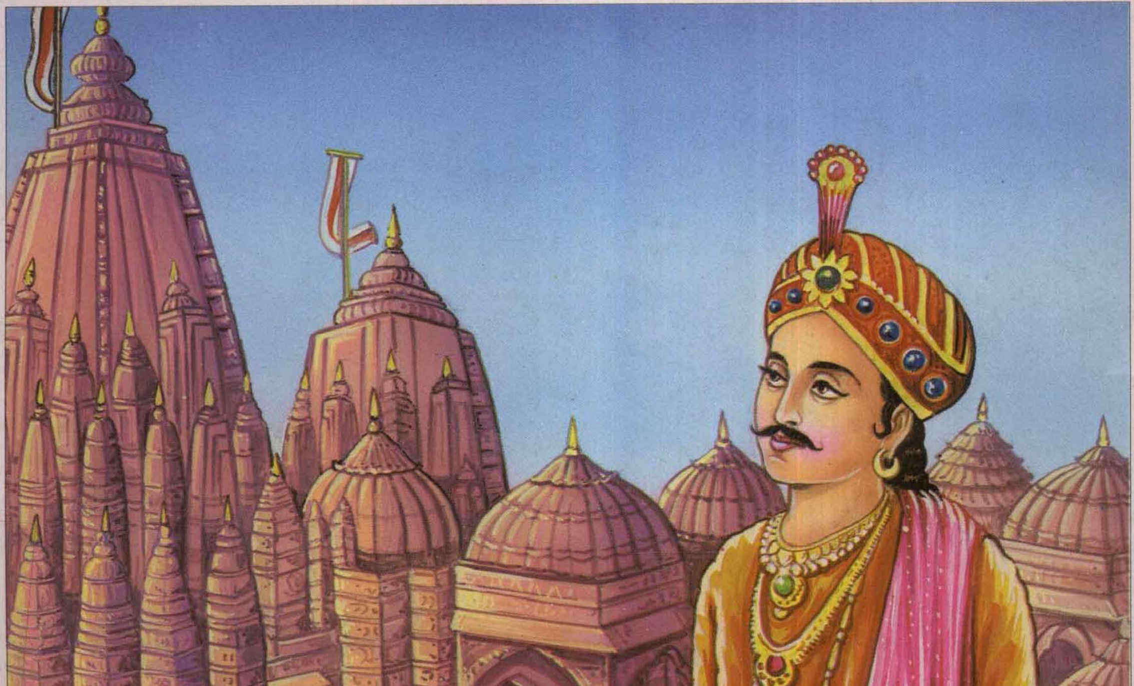


सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सम्राट सम्प्रति

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का नाम और स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विशेषकर बौद्धधर्म के इतिहास में जो महत्त्व अशोक का है लगभग वही महत्त्व जैनधर्म के इतिहास में अशोक पौत्र सम्प्रति का है। सम्पूर्ण भारत और भारत के बाहर विदेशों में जैनधर्म और संस्कृति का प्रसार करने में सम्राट सम्प्रति ने जो योगदान दिया है वह हजारों वर्ष बाद आज भी इतिहास का उज्ज्वल प्रेरक अध्याय बना हुआ है।

जैनधर्म के प्राचीन ग्रंथों—चूर्णि (वि. ७वीं सदी) भाष्य, टीका आदि में अनेक स्थानों पर अशोक पुत्र कुणाल के अंधा होने की घटना तथा सम्प्रति के पूर्वजन्म का प्रसंग व जैनधर्म के प्रसार हेतु विदेशों में श्रावकों को भेजने की चर्चा उपलब्ध है, इससे उसकी ऐतिहासिकता मे किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। किन्तु आश्चर्य है इस प्रतापी और धर्मात्मा वीर सम्राट के सम्बन्ध में भारतीय इतिहास लेखक चुप क्यों रहे ?

सम्राट सम्प्रति का यह कथात्मक चरित्र कुणाल की अगाध पितृ-भक्ति, आचार्य सुहस्ति का आदर्श करुणा भाव, सम्प्रति की धर्म-श्रद्धा, जिनभक्ति एवं गुरु भक्ति तथा जिनशासन प्रजा के हित में किये गये महत्वपूर्ण कार्य साथ ही वीरता, राजनीति कुशलता आदि अनेक गुण इस चरित्र में उभर रहे हैं। जो प्रेरक होने के साथ उसके उज्ज्वल चरित्र को भी दर्शाते हैं।

यह कथा प्रसंग पं. काशीनाथ जैन द्वारा लिखित "सम्राट सम्प्रति" पुस्तक को आधार मानकर लिखा गया है। जिसमें अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य भी हैं।

आचार्यश्री विजय सुशील सूरीश्वर जी के उत्तराधिकारी आचार्यश्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वर के ने इस पुस्तक का लेखन किया है।

*—महोपाध्याय विनय सागर* *—श्रीचन्द सुराना 'सरस'*


**लेखक : आचार्यश्री विजय जिनोत्तम सूरि.**

*सम्पादक :* **श्रीचन्द सुराना "सरस"**

*प्रकाशन प्रबंधक :* **संजय सुराना**

*चित्रांकन :* **श्यामल मित्र**

**प्रकाशक**

**श्री दिवाकर प्रकाशन**

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. दूरभाष : 0562–351165

**सचिव, प्राकृत भारती एकादमी, जयपुर**

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. दूरभाष : 524828, 561876, 524827

**अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)**

**श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा**

18/D, सुकेस लेन, कलकत्ता-700 001. दूरभाष : (242) 6369, 4958 फैक्स : (210) 4139


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सम्राट् सम्प्रति

पाटलीपुत्र में आज सम्राट् अशोक का विजयोत्सव मनाया जा रहा है। विशाल राजसभा के बीच एक ऊँचे सिंहासन पर सम्राट् अशोक आसीन हैं। दोनों तरफ अमात्य, राजपुरोहित, सेनापति तथा अन्य सामन्तगण एवं हजारों नागरिक बैठे हैं। तभी सन्देशवाहक ने सोने के थाल में रखकर पत्र भेंट किया–

राजा ने लिपिकार को आशीर्वाद पत्र लिखने का आदेश दिया और विश्राम करने राजमहल में चले गये।

कुछ देर बाद लेखपाल पत्र तैयार करके ले आया। सम्राट् ने पत्र पढ़ा, उसके नीचे अपने हाथ से एक पंक्ति और लिखी–

फिर राजमुद्रा लगाकर पत्र वहीं रख दिया।

भोजन का समय हो गया था। सम्राट् पत्र वहीं छोड़कर भोजनगृह की ओर चल दिए। रानी तिष्यरक्षिता ने इधर-उधर देखा। कोई नहीं था। उसने एक सलाई ली, आँखों के काले अंजन को सलाई पर लगाया। और महाराज के संदेश पर एक बिन्दु लगा दिया।

फिर पत्र वापस रखकर चुपचाप भोजन कक्ष की ओर चल दी।

1. कुणाल सम्राट् अशोक की सबसे बड़ी रानी का ज्येष्ठ पुत्र था। मृत्यु के समय रानी को महाराज ने वचन दिया था–कुणाल ही मौर्य साम्राज्य का उत्तराधिकारी होगा। तिष्यरक्षिता आदि अन्य रानियाँ कुणाल को मारना चाहती थीं। उसकी जीवनरक्षा के लिए महाराज ने पाटलीपुत्र से दूर अवन्ती में कुणाल को रखा ताकि उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सके।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रानी तिष्यरक्षिता ने "अधीयतां कुमार" को "अंधीयतां कुमार" कर दिया था।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय बाद सम्राट् अशोक के पास दूत समाचार लेकर आया—

दूत ने महाराज को पत्र दिखाया तो वे चौंक गये—

सम्राट अशोक दुःख के सागर में डूब गये।

इधर अवन्ती में अँधा कुणाल धाय माता सुनन्दा की देख-रेख में पलने लगा। अँधेपन के एकाकी जीवन में कुणाल ने तानपूरे को अपना साथी बना लिया। वह एकान्त में तानपूरा बजाता रहता और प्रभु आदिनाथ की भक्ति करता रहता।

समय अपनी गति से चलता रहा।

एक दिन कुणाल की धाय माता सुनन्दा ने सम्राट् अशोक को पत्र भेजा। सम्राट् ने पत्र पढ़ा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

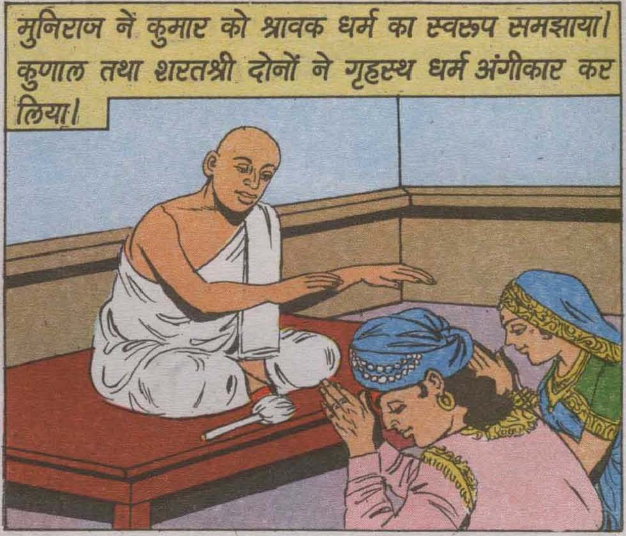

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# ये श्रमण आर्य सुहस्ति के शिष्य थे। आर्य सुहस्ती दशपूर्वधर श्रुत ज्ञानी आचार्य थे। आर्य स्थूलभद्र के पश्चात् उनके पट्टपर दशपूर्वधर आचार्य महागिरि हुए। महागिरि और सुहस्ती दोनों ही आर्य स्थूलभद्र के शिष्य थे।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुणाल को राजसभा में बुलाया गया। उसे एक ओर बिठाकर पर्दा डाल दिया। सूरदास कुणाल ने तानपूरे पर हाथ रखा, तार झनझना उठे। स्वरों का जादू फूटने लगा। उसकी दर्द भरी मीठी आवाज सुनकर सम्राट् अशोक मंत्र मुग्ध हो गया–

कुछ देर तक संगीत के स्वर गूँजते रहे। श्रोता सिर धुनते रहे। झूमते रहे। थोड़ी देर में संगीत बन्द हुआ। तो तालियों की गड़गड़ाहट से राजसभा गूँज उठी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सम्प्रति = अभी-अभी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय पश्चात् अशोक की मृत्यु हो गई। कई दिन तक मगध राज्य शोक में डूबा रहा। शोक से उबरने पर सम्प्रति ने विचार किया–
मुझे अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहिए।
विशाल सेना के साथ वह काशी कौशल आदि राज्यों पर विजय करने निकल पड़ा।
काशी पहुँचने पर वहाँ के गुप्तचरों ने राजा को सूचना दी–
मगधेश्वर सम्राट् सम्प्रति अद्भुत शौर्य का धनी योद्धा है। उसकी सेना अजेय है। उससे युद्ध करना सर्वनाश को निमंत्रण देना है।
काशी आदि के राजाओं ने मिलकर निर्णय लिया–
व्यर्थ ही नरसंहार से क्या लाभ है? उगते सूर्य का प्रताप बादलों से ढक नहीं सकता।
राजाओं ने अनेक तरह के उपहार और अपनी कन्यायें भेंट कर सम्प्रति की अगवानी की। सम्प्रति ने प्रेमपूर्वक उपहार स्वीकार किये–
हम आपकी शरण में ही हैं।
मुझे आपका ऐश्वर्य वैभव नहीं चाहिए। न ही मैं प्रजा का संहार करना चाहता हूँ। आप मगध की छत्र छाया में रहें। बस यही हमारी आज्ञा है।
काशी आदि राज्यों को अपनी छत्र-छाया में मिलाने के पश्चात् सम्प्रति ने मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र आदि को विजय करके दूर-दूर देशों तक मगध साम्राज्य का विस्तार किया।
अनेक देशों की विजय यात्रा करते हुए सम्राट् सम्प्रति अवन्ति वापस पहुँचे। अवन्ति में उनका भव्य स्वागत हुआ।
सम्राट् सम्प्रति की जय हो।
सम्राट् सम्प्रति चिरायु हों।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंगे पाँव सम्राट् को दौड़ता देख लोग एक ओर हट गये। सम्राट् सम्प्रति दौड़कर आर्य सुहस्ती के सामने पहुँचा। तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दना की। आचार्यश्री आश्चर्यपूर्वक सम्राट् को देखने लगे। हाथ जोड़कर सम्राट् ने पूछा—
गुरुदेव ! आप मुझे पहचानते हैं?
हाँ, आप सम्राट् सम्प्रति हैं, महाराज अशोकवर्धन के पौत्र ! पितृभक्त वीर कुणाल के पुत्र आपको कौन नहीं पहचानता?
आचार्यश्री हँसते हुए बोले।
नहीं ! गुरुदेव ! मेरी असली पहचान बताइये।
दो क्षण आचार्यश्री एकाग्र होकर उसे देखते हैं।
और फिर मुस्कराकर बोले—
राजन् ! मैंने आपको अच्छी तरह पहचान लिया। कौशाम्बी नगरी में एक भिक्षुक ने मोदक खाने के लिए दीक्षा ली थी। फिर अति आहार से उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई। वही आत्मा आज सम्राट् सम्प्रति के रूप में यहाँ उपस्थित है।
सम्राट् के पूर्व जीवन का वृत्तान्त सुनकर सभी आश्चर्यचकित एक-दूसरे को देखने लगे।

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

दूसरे दिन सम्राट् सम्प्रति आचार्यश्री की वन्दना करने आया। वन्दना करके उसने पूछा—
भगवन् ! मैं अपनी माता को कैसे प्रसन्न कर सकता हूँ?
राजन् ! तुम्हारी माता परम धार्मिक विचारों की है। धर्म कार्य करने से ही उसके मन को प्रसन्नता मिलेगी।
भगवन् ! बताइए मैं क्या धर्म कार्य करूँ?
राजन् ! जिनमन्दिरों का निर्माण और प्राचीन मन्दिरों का जीर्णोद्धार करना महान् पुण्य लाभ है। तुम यह कार्य करने में समर्थ हो। राजन् ! साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका धर्म के चार आधार स्तंभ हैं। इनकी सेवा-वैयावच्च करना भी महान् पुण्य का कार्य है।
इस प्रकार गुरुदेव से धर्म चर्चा करके सम्राट् सम्प्रति दृढ़धर्मी व्रतधारी श्रावक बन गया।
रथोत्सव की समाप्ति के दिन सम्राट् ने अपने सामन्तों से कहा—
हे सामन्तों, मुझे आपका धन नहीं चाहिए। अपना राज्य भी आप आनन्द से भोगें, परन्तु मेरी एक ही इच्छा है आप जैनधर्म अंगीकार कर अपने देश और नगर में जिनधर्म की प्रभावना करें, सारी प्रजा को धर्म मार्ग में लगाएँ। बस, मेरी यही एक अभिलाषा है।
हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।
वहाँ उपस्थित सभी सामन्तों ने जैनधर्म अंगीकार कर लिया।
एक दिन सम्राट् ने आचार्यश्री से पूछा—
गुरुदेव ! अब सर्वप्रथम मुझे क्या करना चाहिए?
राजन् ! धर्म आराधना का एक प्रखर साधन है—जिन चैत्य। जिन चैत्य रहेंगे तो सबको धर्म की प्रेरणा मिलती रहेगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

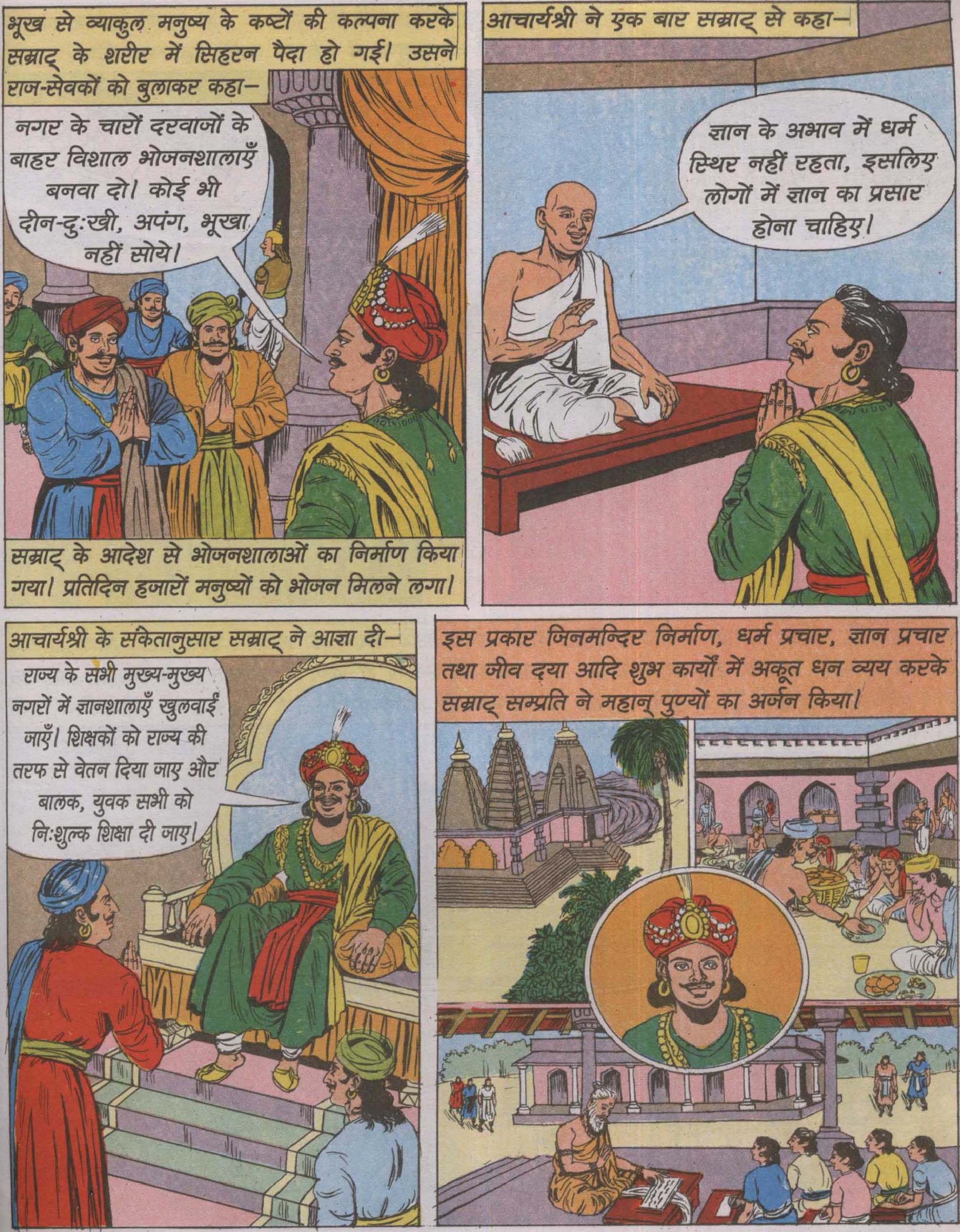




Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

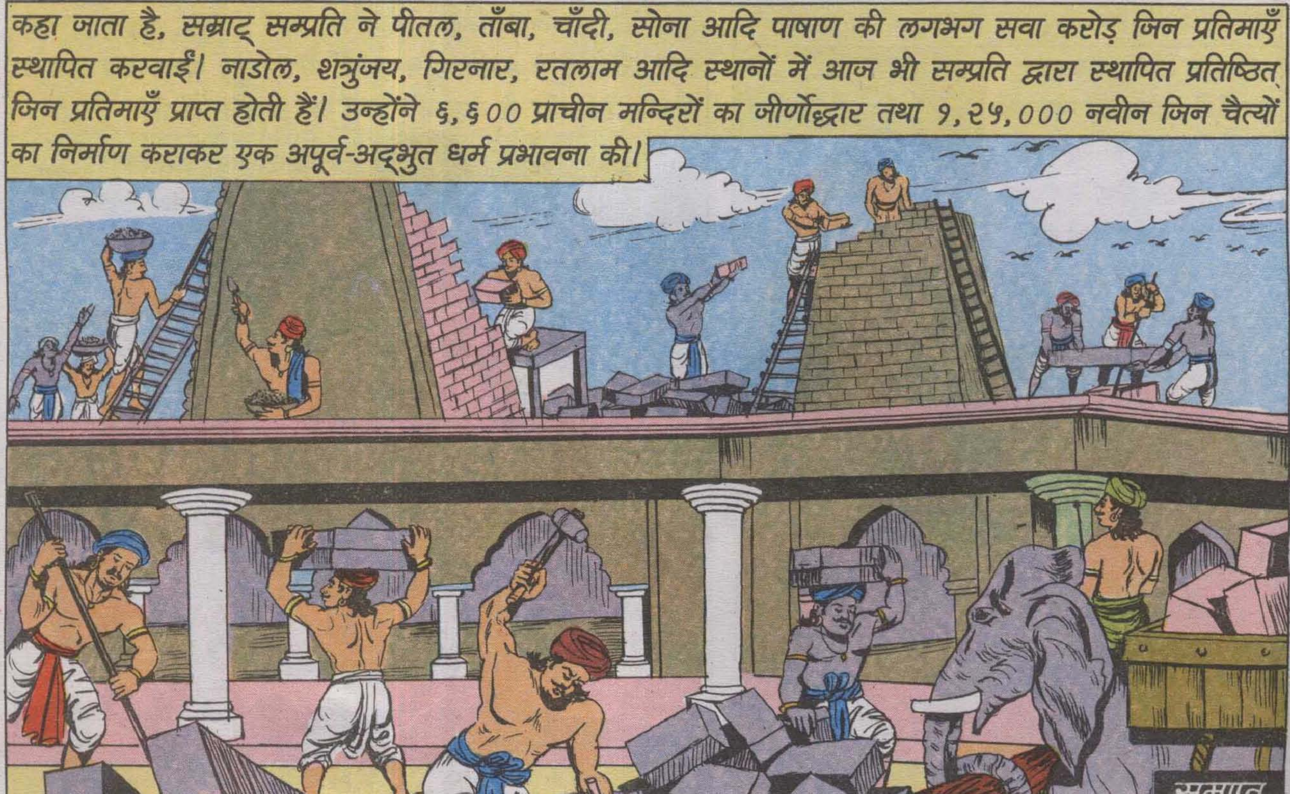




Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# वार्षिक सदस्यता फार्म

मान्यवर,

मैं आपके द्वारा प्रकाशित चित्रकथा का सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे निम्नलिखित वर्षों के लिए सदस्यता प्रदान करें।

(कृपया बॉक्स पर ✓ का निशान लगायें)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ☐ | तीन वर्ष के लिये | अंक 34 से 66 तक | (33 पुस्तकें) | 540/- |
| ☐ | पाँच वर्ष के लिये | अंक 12 से 66 तक | (55 पुस्तकें) | 900/- |
| ☐ | दस वर्ष के लिये | अंक 1 से 108 तक | (108 पुस्तकें) | 1,800/- |

मैं शुल्क की राशि एम. ओ./ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा हूँ। मुझे नियमित चित्रकथा भेजने का कष्ट करें।

नाम (Name)______________________________
(in capital letters)

पता (Address)______________________________

__________________________________________

______________________________ पिन (Pin)__________

M.O./D.D. No.__________ Bank_________________ Amount__________

हस्ताक्षर (Sign.)__________

नोट— • यदि आपको अंक 1 से चित्रकथायें मंगानी हो तो कृपया इस लाईन के सामने हस्ताक्षर करें ..............................
• कृपया चैक के साथ 25/- रुपये अधिक जोड़कर भेजें।
• पिन कोड अवश्य लिखें।

चैक/ड्राफ्ट/एम.ओ. निम्न पते पर भेजें—

## SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-351165

## दिवाकर चित्रकथा की प्रमुख कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धि निधान अभय कुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10 करुणा निधान भ. महावीर (भाग-1, 2)
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्ध चक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजना सुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया (प्रत्येक बुद्ध)
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरी
24. वचन का तीर
25. अजात शत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार (अन्त मति सो गति)
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का जाल
31. पाँच रत्न
32. अमृत पुरुष गौतम
33. आर्य सुधर्मा
34. पुणिया श्रावक
35. छोटी-सी बात
36. भरत चक्रवर्ती
37. सद्दाल पुत्र
38. रूप का गर्व
39. उदयन और वासवदत्ता
40. कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य
41. कुमारपाल और हेमचन्द्राचार्य
42. दादा गुरुदेव जिनकुशल सूरी
43. श्रीमद् राजचन्द्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# एक बात आपसे भी.........

सम्माननीय बन्धु,

सादर जय जिनेन्द्र !

जैन साहित्य में संसार की श्रेष्ठ कहानियों का अक्षय भण्डार भरा है। नीति, उपदेश, वैराग्य, बुद्धिचातुर्य, वीरता, साहस, मैत्री, सरलता, क्षमाशीलता आदि विषयों पर लिखी गई हजारों सुन्दर, शिक्षाप्रद, रोचक कहानियों में से चुन-चुनकर सरल भाषा-शैली में भावपूर्ण रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक छोटा-सा प्रयास हमने गत चार वर्षों से प्रारम्भ किया है।

अब यह चित्रकथा अपने पाँचवे वर्ष में पदार्पण करने जा रही है।

इन चित्रकथाओं के माध्यम से आपका मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही जैन इतिहास संस्कृति, धर्म, दर्शन और जैन जीवन मूल्यों से भी आपका सीधा सम्पर्क होगा।

हमें विश्वास है कि इस तरह की चित्रकथायें आप निरन्तर प्राप्त करना चाहेंगे। अतः आप इस पत्र के साथ छपे सदस्यता पत्र पर अपना पूरा नाम, पता साफ-साफ लिखकर भेज दें।

आप इसके तीन वर्षीय (33 पुस्तकें), पाँच वर्षीय (55 पुस्तकें) व दस वर्षीय (108 पुस्तकें) सदस्य बन सकते हैं।

आप पीछे छपा फार्म भरकर भेज दें। फार्म व ड्राफ्ट/एम. ओ. प्राप्त होते ही हम आपको रजिस्ट्री से अब तक छपे अंक तुरन्त भेज देंगे तथा शेष अंक (आपकी सदस्यता के अनुसार) प्रत्येक माह डाक द्वारा आपको भेजते रहेंगे।

धन्यवाद !

आपका

**नोट—वार्षिक सदस्यता फार्म पीछे है।**

**श्रीचन्द सुराना 'सरस'**

सम्पादक


## SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-351165

## हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सचित्र भावपूर्ण प्रकाशन

| पुस्तक का नाम | मूल्य | पुस्तक का नाम | मूल्य | पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| सचित्र भक्तामर स्तोत्र | 325.00 | सचित्र ज्ञातासूत्र (भाग-1, 2) | 1,000.00 | सचित्र दशवैकालिक सूत्र | 500.00 |
| सचित्र णमोकार महामंत्र | 125.00 | सचित्र कल्पसूत्र | 500.00 | भक्तामर स्तोत्र (जेबी गुटका) | 18.00 |
| सचित्र तीर्थंकर चरित्र | 200.00 | सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र | 500.00 | सचित्र मंगल माला | 20.00 |
| सचित्र आचारांग सूत्र | 500.00 | सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र | 500.00 | सचित्र भावना आनुपूर्वी | 21.00 |

## चित्रपट एवं यंत्र चित्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वसिद्धिदायक णमोकार मंत्र चित्र | 25.00 | श्री गौतम शलाका यंत्र चित्र | 15.00 |
| भक्तामर स्तोत्र यंत्र चित्र | 25.00 | श्री सर्वतोभद्र तिजय पहुत्त यंत्र चित्र | 10.00 |
| श्री वर्द्धमान शलाका यंत्र चित्र | 15.00 | श्री घंटाकरण यंत्र चित्र | 25.00 |
| श्री सिद्धिचक्र यंत्र चित्र | 20.00 | श्री ऋषिमण्डल यंत्र चित्र | 20.00 |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सेवा शिक्षा और साधना के लिये समर्पित सात दशक

# SHREE SHWETAMBER STHANAKVASI JAIN SABHA

**(EST. 1928)**

**18/D, SUKEAS LANE, CALCUTTA-700 001**

**Tel. : (242) 6369, 4958 Fax : (210) 4139**

## DIFFERENT ACTIVITIES

1. **SHREE JAIN VIDYALAYA (H.S.) (EST. 1934)**
   CALCUTTA-700 001
   2,700 STUDENTS (CLASS I TO XII)
2. **SHREE JAIN VIDYALAYA FOR BOYS (EST. 1992)**
   25/1, BON BEHARI BOSE ROAD, HAWRAH-700 001
   HIGHER SECONDARY INST.
   2,500 STUDENTS CLASS I TO XII
3. **SHREE JAIN VIDYALAYA FOR GIRLS (H. S.) (EST. 1992)**
   25/1, BON BEHARI BOSE ROAD, HAWRAH-700 001
   HIGHER SECONDARY INST.
   2,500 STUDENTS CLASS I TO XII
4. **SHREE JAIN BOOK BANK PROJECT (EST. 1978)**
   DISTRUBING 2000 SETS OF BOOKS TO THE REGULAR STUDENTS OF W.B.
   AT PRESENT ABOUT 100 CENTRES
5. **SHREE JAIN HOSPITAL & RESEARCH CENTRE**
   493-B/12, G. T. ROAD, (S) HAWRAH-700 002
   A 220 BEDDED GENRAL HOSPITAL EARTH MODREN EQUIPEMENT AND 24 HOURS AMBULANCE SERVICES WITH X-RAY, ECG, SONOGRAPHY, ULTRA SOUND, ICU, ICCU, EYE, ENT, DENTAL PEADRIATIC GYANE, LAPROSCOPY ETC. LATEST O. T. INSTRUMENTS WITH RENOWNED DOCTORS. FREE ARTIFICIAL LIMB AND CALIPER DISTRIBUTION ROUND THE YEAR.
6. **MANAV SEVA PRAKALP**
   RENDERING ITS SERVICES BY SUPPLYING FREE RATION TO POOR, DISABLED AND NEEDY PEOPLE ROUND THE YEAR. ABOUT 125 PEOPLE ARE TAKING THE ADVANTAGE THROUGH THIS PRAKALP.
7. **FREE EYE-OPERATION CAMP** : THRICE IN A YEAR BY REPUTED DOCTORS.
   FREE MEDICINE & SPECTACLE DISTRIBUTION : THRICE IN A YEAR.
8. FREE MEDICAL CHECK-UP, BLOOD DONATION.
9. SEMINAR ON CARDIAC CARE, DIABITIS, HEALTH CARE, CHILD CARE ETC WITH THE HELP OF REPUTED MEDICAL COMPANIES & RENOWNED DOCTORS.
10. **SHREE JAIN SHILPA SHIKSHA KENDRA, CALCUTTA (EST. 1984)**
    (RECOGNISED BY THE N. O. S.)
    MINISTRY OF HUMAN RESOURSE & DEVELOPMENT GOVT. OF INDIA.
    CLASS X & XII

# जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक, रोचक सचित्र कहानियाँ।

## प्रसिद्ध कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धिनिधान अभयकुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10. करुणानिधान भ. महावीर
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्धचक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजनासुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरि
24. वचन का तीर
25. अजातशत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का फल
31. पाँच रत्न

**55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 900.00 रुपया। 33 पुस्तकों के सैट का मूल्य 540.00 रुपया।**

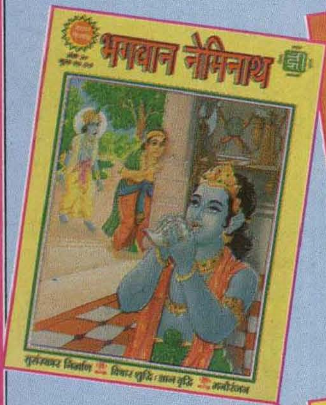

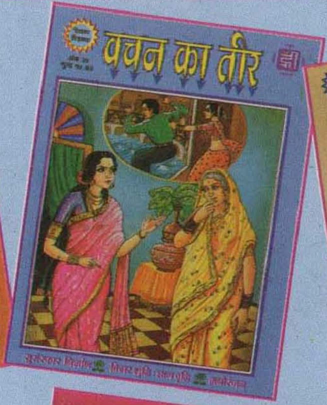

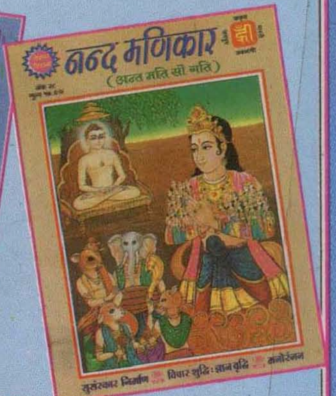

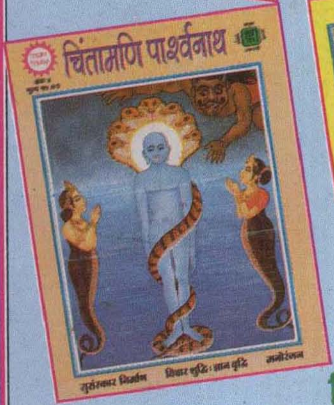

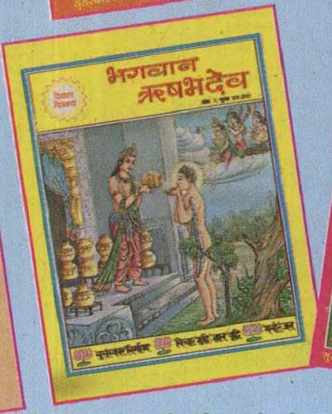

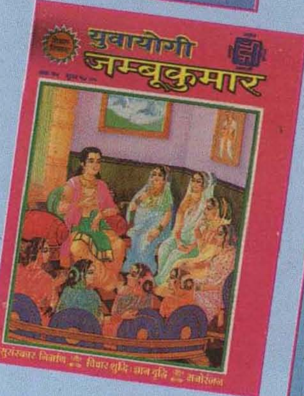

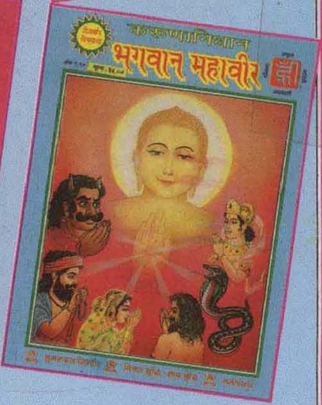


चित्रकथाएँ मँगाने के लिए अंदर दिये गये सदस्यता फॉर्म को भरकर भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org